



अंधी का बेटा लघु कथा / छोटी कहानी

एक औरत थी, जो अंधी थी, जिसके कारण उसके बेटे को स्कूल में बच्चे चढ़ाते थे, कि अंधी का बेटा आ गया, हर बात पर उसे ये शब्द सुनने को मलित था कि अन्धी का बेटा . इसलिए वो अपनी माँ से चड़िता था . उसे कही भी अपने साथ लेकर जाने में हचिकता था उसे नापसंद करता था.. उसकी माँ ने उसे पढ़ाया.. और उसे इस लायक बना दिया की वो अपने पैरो पर खड़ा हो सके.. लेकिन जब वो बड़ा आदमी बन गया तो अपनी माँ को छोड़ अलग रहने लगा.. एक दिन एक बूढ़ी औरत उसके घर आई और गार्ड से बोली.. मुझे तुम्हारे साहब से मलिना है जब गार्ड ने अपने मालकि से बोल तो मालकि ने कहा कि बोल दो मैं अभी घर पर नहीं हूँ. गार्ड ने जब बुढ़िया से बोला कि वो अभी नहीं है.. तो वो वहा से चली गयी..!! थोड़ी देर बाद जब लड़का अपनी कार से ऑफिस के लिए जा रहा होता है.. तो देखता है कि सामने बहुत भीड़ लगी है.. और जानने के लिए कि विहा क्यों भीड़ लगी है वह वहा गया तो देखा उसकी माँ वहा मरी पड़ी थी.. उसने देखा की उसकी मुट्ठी में कुछ है उसने जब मुट्ठी खोली तो देखा की एक लेटर जिसमे यह लिखा था कि बेटा जब तू छोटा था तो खेलते वक्त तेरी आँख में सरिया धंस गयी थी और तू अँधा हो गया था तो मैंने तुम्हे अपनी आँखे दे दी थी.. इतना पढ़ कर लड़का जोर-जोर से रोने लगा.. उसकी माँ उसके पास नहीं आ सकती थी.. दोस्तों वक्त रहते ही लोगो की वैल्यू करना सीखो.. माँ-बाप का करज हम कभी नहीं चूका सकत.. हमारी प्यास का अंदाज़ भी अलग है दोस्तों, कभी समंदर को ठुकरा देते है, तो कभी आंसू तक पी जाते है..!!! बैठना भाइयों के बीच, चाहे बैर ही क्यों ना हो.. और खाना माँ के हाथो का, चाहे जहर ही क्यों ना हो..!!...